GOSSNER EVANGELICAL – LUTHERAN CHURCH IN CHOTANAGPUR AND ASSAM

GELC ARCHIVE

Signature: **GELC-A _ 001 _ 0688**

Classification:

Original File No:

Title

Evangelism

Volume:

Running **from year: 1948** **till year:**

Content:

- Tour report of S.Horo.

Tour Report of
S. Horo (Head Preacher)

dtd. 4-11-48 & 14-12-48

हेड प्रचारिका का दौरा प्रोग्राम ।

5 - 23 नोवेम्बर 1948 ई०

जैनपुर इलाका ।

S Horo

Ast PraCharika.

4. 11. 48.

To the Secretary G.E.L. Church
Ranchi

महामान्यवर सेक्रेटेरी साहब

आप को जनाया जाता है कि –

I प्रभुदासी लकड़ा प्रचारिका का तलब, स्केल और सरभिस मोताबिक रु 14/- होना चाहिये। अर्थात C.C. से रु 12/- और इलाका से रु 2/- सब प्रचारिकाओं का ठीक है केवल प्रभु दासी का गड़बड़ है। C.C. कृप्या इस बात पर ध्यान देवे।

II प्रभुदासी लकड़ा हेड प्रचारिका के साथ दौरा करती है इस लिये इलाका से जो उसको महीना रु 2/- मिलता है वह कौन देगा?

कृप्या C.C. इस बात पर बिचार करे और प्रभुदासी लकड़ा का तलब ठीक किया जावे।

आप की बिश्वस्त
S. Topno
Hd Pracharika
4.11.48.

हेड प्रचारिका का दौरा रिपोर्ट

१४ अक्टोबर से १ला नोवेम्बर १९४८. रांची पेरिश।

14 ता: को मैं प्रभुदासी लकड़ा प्रचारिका के साथ रांची चली गई। १४–१८ ता: तक पादियों के शिक्षा क्लास्स में भागी हुई। १९ ता: से हम ने रांची पेरिश की टोलियों में घूमना शुरू किई। १९ ता: को हम कोकोर मराडली में गईं। हमने हरएक घर में जाकर बहिनों से मिली और समाज के लिये भाई बहनों को जमा किई। घर २ घूमने से हमने यही पाया कि घर २ हंड़ियां बनाते और पीते हैं। रात में हमने समाज बैठकी की, भाई, बहन, बच्चे जमा हुए, हां कितने मतवाले होकर भी आये थे। ईश्वर का वचन उन्हें सुनाई वे वचन को ग्रहण करने वाले दिखाई देते थे। प्रभु ही अपने सामर्थ से उनका मन को नया बनावे। बहिनों का समाज होता है।

२० ता: को हम नामकोम चली गईं। नमकोम में बहिनें जमा हुईं और समाज किई। बजार के कारण थोड़े बहिनों से मुलाकात हो सकी।

२१ ता: को पत्थल खुखरा का समाज देखी। बहिनों को कुछ जागृत दशा में पाई।

23 ता: को कडरु का समाज देखी। ता: २४.२५ को चिवटी का समाज देखी। २८ ता: को पवित्र प्रभुभोज किताब बिक्री किई।

२७ ता: को मैं बुर्जू लौट रही थी पर लोरी के बिगड़ने से मुझे फिर लौटना पड़ा। साम २ को मैं घूमते २ एक बिधवा बंगाली खिस्तान बुढ़िया के पास पहुंची। वह अकेली थी उसकी दशा बहुत खराब थी। उसकी हृदय की कमजोरी थी। उसकी बड़ी अर्जी के कारण मुझे २७ से ३१ तक उसकी सेवा में रहना पड़ा। वह बारम्बार मुझ से वचन सुनना और प्रार्थना चाहती थी। मैंने इस सेवा को बड़ी बात समझी और उस बिधवा बहिन की सेवा की।

१ला नोवेम्बर को मैं बुर्जू लौट आई। प्रचारिका प्रभुदासी लकड़ा भी अपने घर से मिला की भारी बीमारी का तार आने से ~~तीन~~ आठ दिन के लिये घर गई थी।

रांची पेरिश में हमारा काम जैसा चाहिये नहीं होने सका क्योंकि हमारे घूमने के लिये कोई प्रबन्ध नहीं था। रांची की आत्मिक दशा बहुत गिरी हुई है। एक जगह भी ठीक से समाज नहीं चलता है। जैसी हरएक टोली में समाज चलाने के लिये योग्य बहिनें हैं।

इलाका मे भी बहिनों के समाज के लिये जोर देना है।
घरेलू प्रार्थना भी बहुत कम घरों में होता है।

प्रचारिकाओं का रिपोर्ट अब तक मुझे नहीं मिला है शिक्षा क्लास्स से लौट के जोरों से अपनी इलाका में दौरा कर रही हैं। मैनी समद और अतिला सुरिन इन दिनों में बुर्जू बेथेल शिक्षा क्लास्स में हैं। बीते शिक्षा क्लास्स के समय नहीं आई थीं।

सेप्टेम्बर महीने से प्रचारिकाओं को तलब नहीं मिली है कृपया भेज दिया जावे।

आप की बिश्वस्त
S. [illegible]
Hd Pracharika.
4. 11. 48.

14 अक्तोबर से 1 ला नोवेम्बर 1948. रांची पेरिश।

14 ता. को मैं प्रभुदासी लकड़ा प्रचारिका के साथ रांची चली गईं। 14-18 ता. तक पादियों के शिक्षा क्लास्स में भागी हुई। 19 ता. से हमने रांची पेरिश की टोलियों में घूमना शुरू किई। 19 ता. को हम कोन्कोर मराडली में गईं। हमने हरएक घर में जाकर बहिनों से मिलीं और समाज के लिये भाई बहनों को जमा किई। घर २ घूमने से हमने यही पाया कि घर २ हड़ियां बनाते और पीते हैं। रात में हमने समाज बैठकी की, भाई बहन बच्चे जमा हुए, हां कितने मनवाले होकर भी आये थे। ईश्वर का बचन उन्हें सुनाई वे बचन को ग्रहण करने वाले दिखाई देते थे। प्रभु ही अपने सामर्थ से उनका मन को नया बनावे। बहिनों का समाज होता है।

20 ता. को हम नामकोम चली गईं। नामकोम में बहिनें जमा हुईं और समाज किई। बजार के कारण थोड़े बहिनों से मुलाकात हो सकी।

21 ता. को पत्थल कुदवा का समाज देखी। बहिनों को कुछ जाग्रत दशा में पाई।

23 ता. को कडरु का समाज देखी। ता 24, 25 को डिबडी का समाज देखी। 26 ता. को पवित्र प्रभुभोज किताब बिक्री किई।

27 ता. को मैं बुर्जू लौट रही थी पर लोरी के बिगड़ने से मुझे फिर लौटना पड़ा। साम २ को मैं घूमते २ एक बिधवा बंगाली खिरस्तान बुढ़िया के पास पहुंची। वह अकेली थी उसकी दशा बहुत खराब थी। उसकी हृदय की कमजोरी थी। उसकी बड़ी अर्जी के कारण मुझे 27 से 31 तक उसकी सेवा में रहना पड़ा। वह बारम्बार मुझ से बचन सुनना और प्रार्थना चाहती थी। मैंने इस सेवा को बड़ी बात समझी और उस बिधवा बहिन की सेवा की।

1 ला नोवेम्बर को मैं बुर्जू लौट आई। प्रचारिका प्रभुदासी लकड़ा भी अपने घर से पिता की भारी बीमारी का तार आने से तीन आठ दिन के लिये घर गई थी।

रांची पेरिश में हमारा काम जैसा चाहिये नहीं होने सका क्योंकि हमारे घूमने के लिये कोई प्रबन्ध नहीं था। रांची की आत्मिक दशा बहुत गिरी हुई है। एक जगह भी ठीक से समाज नहीं चलता है। तौभी हरएक टोली में समाज चलाने के लिये योग्य आदमी हैं।

इलाका में भी बोहरों के समाज के लिये जोर देना है।
घरेलू प्रार्थना भी बहुत कम घरों में होता है।

प्रचारिकाओं का रिपोर्ट अब तक मुझे नहीं मिला है
शिक्षा क्लास से लौट के जोरों से अपनी इलाका में दौरा कर रही हैं।
नेमी समद और अलिसा सुरिन इन दिनों में बुजू बेड़ा शिक्षा क्लास में हैं। बीते शिक्षा क्लास के समय नहीं आई थीं।

सेप्टेम्बर महीने से प्रचारिकाओं को तलब नहीं मिली है कृपया भेज दिया जावे।

आप की बिश्वस्त
S. Hood
Hd Pracharika.
4.11.48.

F55

(P)

हैडप्रचारिका का दौरा प्रोग्राम

15 — 19 गोविन्दपुर घेरिरा

S. Jain
Hd Pracharika
14.12.48

हेडप्रचारिका का दौरा रिपोर्ट।

6 – 30 नोवेम्बर 1948 ई० चैनपुर इलाका।

6 ता: को मैं प्रभुदासि लकड़ा प्रचारिका के साथ रांची चली गई, रांची में प्रचारिका की तबियत खराब होने के कारण तीन चार इतवार रांची में ठहरना पड़ा। 8 ता: को हम गुमला चली गई। रास्ते पर लोरी बिगड़ने के कारण रात को गुमला पहुंची। 9 ता बिहान को हम दो बीमारी पादरी का घर जाकर उनके साथ प्रार्थना किई। चैनपुर जाने के लिये भरिया न मिलने के कारण, हम भारी सोच में पड़े भाग्यबस एक बैलगाड़ी मिली जिसमें हम बहुत जोर पानी के समय बारसा पाकर मझाटोली तक 10 ता: बिहान को पहुंची, वहां से आगे दूसरी गाड़ीवान को पकड़ना पड़ा। जामटोली तक हम बैलगाड़ी से गई आगे भूख के कारण हम को खाना खोजने के लिये केमटे जाना पड़ा, खाना खाकर हम कांसीर चली गई क्योंकि हमारा सामान बैलगाड़ी के द्वारा कांसीर चला गया। कांसीर में भाई बहन रात को जमा हुए और हमने उनको ईश्वर का वचन सुनाया।

कांसीर में बहिनों का समाज है। हमने वहां के लोगों में आत्मिक भूख देखी। हर साम को प्रार्थना गिर्जा भी होता है।

11 ता: को हम फिर केमटे मण्डली चली गई। केमटे में 10 बजे बिहान को बैठकी हुई भाई बहन हाजिर थे पर भाई लोग आमगांव में मिटिंग होने के कारण चले गये। बहिनों का समाज चलता है बहिनें समाज की उन्नति की कोशिश में हैं। साम को हम फिर दूसरी टोली में समाज किये और भाई लोग भी शामिल थे। भाई बहनों में आत्मिक भूख है।

12 ता: हम आमगांव मण्डली में चली गई। आमगांव में रात को समाज बैठकी हुई। समाज होने से पहले हम घर 2 घूमी और घड़ा सिरमी और घरेलू प्रार्थना के विषय विशेष जांच किये। घड़ा सिरमी ठीक है पर घरेलू प्रार्थना नहीं होती है। रात के समाज में भाई बहन जमा हुए। वहां के भाई बहनों में आत्मिक जागृति पाई। 13 ता: को हम पुलुक मण्डली में चली गई। पुलुक के भाई बहन हमें बहुत आनन्द से ग्रहण किये।

14 ता: को बिहान को डिबटी का समाज देखी। समाज चलता है पर चलाने वाली केवल एक बहिन होने के कारण कोई 2 दिन समाज बन्द हो जाती है। हमने उपाय बताया कि अनपढ़ लोग किस प्रकार समाज चला सकती है। समाज के बाद पुलुक गिर्जा गई। पुलुक गिर्जा में मुझे उपदेश पारी मिला। गिर्जे के बाद बहिनों का समाज हुआ। समाज अच्छा चलता है। भाई बहिनों में आत्मिक जागृति है। सन्डे स्कूल भी चलता है। रात को फिर भाई बहन मिलके ईश्वर का वचन सुनें।

15. ता: को हम बिरकेरा मण्डली में चली गईं। हमारे पहुंचने से बिरकेरा मण्डली का मास्टर ~~हमारे~~ भाई बहनों को जमा करने के लिये इधर उधर भाईयों को भेजे और भाई बहन लोगों ने ईश्वर का बचन सुनने के लिये जमा हुए। समाज से निकल कर हम घर 2 घूमने गईं। घड़ा मिरली के विषय जांचने से हमने पाया कि सब घर में बहिनें रखती हैं। रात को हम फिर जमा हुए और ईश्वर के बचन से सुने भाई बहन ईश्वरीय सेवा आराधना के लिये जागृत हैं। कितने संसार लोग भी ईश्वर का बचन सुनने को आये। बहिनों का समाज चलता है।

16 ता: को हम कोडी मण्डली में चली गईं। वहां भी रात को भाई बहन एक साथ समाज किये। बहिनों का समाज चलता है। चलाने वालों की बड़ी से समाज की उन्नति जैसा चाहिये नहीं हो रहा है। दूसरे दिन बिहान को हम घर 2 घूमने गईं। घर 2 घूमने से हमने पाया कि कितनी बहिनें घड़ा मिरली रखने में भूल करती हैं अर्थात खाना पकाने के समय नहीं रखती हैं पर इतवार को गिर्जा जाने के समय घड़े से निकाल कर ले जाती हैं हमने इससे क्या हानि है बताया। बाद में हम चैनपुर चली गईं।

17 ता: शाम चैनपुर का समाज देखी।
महिला समिति और युवती समाज एक साथ हुआ। चैनपुर का समाज बाराडली में अनबन होने के कारण ठीक से नहीं चलता है। कितनी बहिनें समाज में भागी होने नहीं मांगती हैं। हमने घर जाकर हर एक को समझाईं। समझाने से ऐसी मालूम पड़ी कि बहिनें समाज में भागी होंगी।
अनपढ़ लोग शिक्षितों के द्वारा ठोकर खाते हैं।

18 ता: दूसरी बेला भैंसकुण्ड मण्डली चली गईं।
भैंसकुण्ड में हमारे आने का ठीक खबर नहीं पहुंचा था जिसके कारण दूसरे टोली के लोग भी नहीं आये।
19 ता: को भैंसकुण्ड में भाई बहन समाज बैठकी में हाजिर ~~हुए और बहुत लालसित मन से ईश्वर का बचन सुने।~~
~~नहीं बहिनों का समाज नहीं है। शिक्षित बहिनें न होने के कारण~~
हुए और बहुत लालसित मन से ईश्वर का बचन सुने। शिक्षित बहिनें न होने के कारण समाज नहीं होता है।

किड़ा में है। दो जन को तो बचा ही लिये। जसपुर नगर में स्तूस्तान चर्च को बनाये रखने के लिये भाई बहन चिन्ता करते हैं। भाई बहन बड़े हुए मिल के भी समाज चोखेबे करते हैं, क्योंकि तो रांची से निकली बात में है

२९ ता. को गुमला आई और ३० ता: को गुमला से रांची होते हुए मुरहू गई और १०ता ता: को बुर्जू पहुंची।

चैनपुर इलाका में दौरा करने से मैंने यही पाया कि

I भाई बहन ईश्वर के वचन को भूलते हैं, आत्मिक उन्नति की कमियां हैं

II शिक्षा दीक्षा बहुत कम है।

III मिस्ट्रेस्सों और लड़कियों की चाल चलन पर विशेष ध्यान दिया जावे। जैसे खुंटी टोली और नगर।

प्रभु आप ही हमारे वचन प्रचारिकाएं इन्हा को बढ़ावे और जगावे। प्रचारिकाओं की खास आवश्यक है।

IV ~~चैनपुर~~ इलाका के ~~कई~~ मराडलियों में साल में एक बार प्रभुभोज दिया जाता है। कृपा C.C. करीवाई करें कि पादरी लोग इसको आत्मिक उन्नति की घटी समझें।

आप की विश्वस्त

G. Mizo

Std Pracharika

14.12.48.

19 ता: को बेन्देकोना में भाई बहन जमा हुए और ईश्वर के वचन से उन्हें शिक्षा दिई। नई मराडली में नया जोश है। ईश्वर के वचन के लालसित हैं। समाज भी चलता था पर प्रचारिन के बीमार होने से बन्द हो गया था हमने फिर नई रीति से चलाने का रास्ता दिखाया।

20 ता: को हरीं मराडली में चली गई।

21 ता: को हरीं मराडली में उपदेश का भार मुझे मिला और स्त्रियों के बाद समाज हुआ। बहिनों का समाज चलता है लेकिन समाज को चलाने वाली केवल एक जन होने के कारण कभी चलता कभी बन्द होता है। हरीं मराडली की आत्मिक जीवन गिरते जा रही है। वहां के लिये योग्य प्रचारक की जरूरत है सिखापीना भी चलता है। उसी दिन हम आगे हरीडिपा मराडली चली गई। हरीडिपा में केवल दो ख्रीस्तान घर हैं दोनों घर की आत्मिक जीवन ठीक है।

22 ता: को हम बांधकोना मराडली चली गई। बांधकोना भी नयी मराडली है। भाई बहन नये धर्म में घुसने से खुश हैं पर एक घराना सिखापीने को अब तक बिलकुल नहीं छोड़े हैं। मराडली अगुओं को ऐसों की विशेष सुधि लेना है।

23 ता: को हम पत्थरशिलि मराडली चली गई। वहां भी प्रचारक के घर के साथ दो ख्रीस्तान घर हैं। पानी पड़ने के कारण 24 ता. को भी हम को वहीं रहना पड़ा। वहां के भाई बहनों को ईश्वर का वचन सुनाई। दो घर होने पर भी वे विश्वास में स्थिर नहीं हैं।

25 ता: को मनोरा गई। मनोरा में केवल एक ख्रीस्तान घराना है स्त्रियों के लिये उनको बहुत तकलीफ है। हमने उन्हें भी ईश्वर का वचन सुनाकर 26 ता: को जसपुर नगर चली गई। 27 ता: को महिला समिति देखी और 28 ता: को तारालेंग और ज्योतिसेना देखी। बहिनों और युवतियों का समाज अच्छा चलता है पर ज्योतिसेना थोड़ा दुर्बलता से चलता है। आनन्द की बात कि हिन्दू स्कूल के बोर्डिंग में केवल ख्रीस्तान मिस्ट्रेस और लड़कियां बोर्डिंग में हैं जिससे बोर्डिंग में समाज चलाना आनन्द से लगता है पर समाज चलाने वालों को ईश्वर के वचन के जानने वाले होना चाहिये। लड़कियों और बच्चों में धार्मिक भूख है पर ठीक शिक्षा देने वाले कोई हैं नहीं। बहुत जरूरी है एक केवल शिक्षिका को नगर में रखना। वहां मिस्ट्रेसों को हिन्दू धर्म में खींचने के लिये बहुत